www.thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

POSTAGE PRE-PAID MAIL BUSINESS CENTRE

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 73 अंक: 35
सृष्टि संवत् 1960853117
27 नवम्बर, 2016
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926 5062726

जालन्धर

वर्ष-73, अंक : 35, 24-27 नवम्बर 2016 तदनुसार 13 मार्गशीर्ष सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

अहिंस्य आत्मा

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

न यं रिपवो न रिषण्यवो गर्भे सन्तं रेषणा रेषयन्ति।
अन्धा अपश्या न दभन्नभिख्या नित्यास ईं प्रेतारो अरक्षन्।।
-ऋ० १।१४८।५

शब्दार्थ-गर्भे+ सन्तम् = गर्भ में रहते हुए भी **यम्** = जिसको **न** = न तो **रिपव :** = शत्रु और **न** = न **रिषण्यवः** = हिंसाभिलाषी **रेषणाः** = हिंसक **रेषयन्ति** = मार और मरवा सकते हैं। **अपश्याः** = न देखने वाले **अन्धा :** = अन्धे **न** = नहीं **दभन्** = दबा सकते ; **-अभिख्याः** = सब ओर देखने वाले **नित्यासः** = नित्य **प्रेतारः** = उत्तम ज्ञानी **ईम्** = उसकी **अरक्षन्** = रक्षा करते हैं।

व्याख्या-इस मन्त्र में आत्मा की नित्यता का सुस्पष्ट प्रतिपादन किया गया है। इस मन्त्र का देवता अग्नि है। अग्नि शब्द का एक अर्थ आत्मा भी है। ब्राह्मणग्रन्थों में अनेक स्थानों पर आया है **'आत्मा वा अग्निः'** [निश्चय से आत्मा अग्नि है]। जब तक आत्मा देह में रहता है, तभी तक शरीर में अग्नि रहती है। आत्मा ने शरीर छोड़ा कि शरीर ठण्डा पड़ गया, अतः आत्मा आग है। अग्नि का एक अर्थ 'ले-जाने वाला' है। आत्मा ही शरीर को ले-चलता है। आत्मा के कारण ही शरीर में वृद्धि होती है, अतएव आत्मा अग्नि है।

मनुष्य के सैकड़ों शत्रु होते हैं, उनमें कई ऐसे होते हैं जो इसे जान से मार देना चाहते हैं। वे मनुष्य का अङ्ग-भङ्ग कर सकते हैं, मनुष्य के शरीर की हिंसा कर सकते हैं, किन्तु आत्मा की **'न रेषयन्ति'** हिंसा नहीं कर सकते। वैज्ञानिक बतलाते हैं कि आग, हवा, पानी संसार के पदार्थों के जहाँ स्थिति कारण हैं, वहाँ विनाश भी यही करते हैं। अग्नि जलाकर नाश करती है, पवन उड़ाकर आँधी के रूप में आकर अनिष्ट करता है। बाढ़ के रूप में बढ़कर पानी अनेकों को डुबाता है, किन्तु-**'न यं रिपवो न रिषण्यवो गर्भे सन्तं रेषणा रेषयन्ति।'**-शरीरस्थ आत्मा का न तो रिपु और न हिंसाशक्ति वाले हिंसक ही नाश कर सकते हैं। गीता में बहुत सुन्दर शब्दों में इसका अनुवाद किया गया है-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।। -गीता २।२३

इसे शस्त्र नहीं काट सकते, ना ही इसे अग्नि जला सकती है, जल इसे गीला नहीं कर सकता, पवन इसे सुखा नहीं सकता। **'अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।'** [२।२४]-यह अकाटय है, न जलाया जा सकता है, न भिगोया जा सकता है और न सुखाया जा सकता है। **'देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।'** [२।३०]-हे अर्जुन ! सभी के देह में यह आत्मा अवध्य है। आत्मा को मरने वाला मानने वाले अज्ञानी हैं-**'हन्ता चेन्मन्यते हन्तुँ हतश्चेन्मन्यते हतम्। उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते।।'** [कठो० १।२।१९]-जो इसे मारने वाला मानता है, जो इसे मरा मानता है, वे दोनों अज्ञानी हैं। न यह मारता है और न यह मरता है।

'गर्भे सन्तम्' का अर्थ **'गूढमनुप्रविष्टम्'** उपनिषदों ने किया है। तभी तो-**'अन्धा अपश्या न दभन्'** = न देखने वाले और अन्धे इसे नहीं देखते। जिनकी अन्दर-बाहर की दोनों ओर की आँखें फूटी हुई हैं, ये आत्मा को नहीं देख पाते। जीते-मरे शरीरों का भेद जिन्हें ज्ञात नहीं, सचमुच वे 'अपश्य' हैं। शरीर की वृद्धि देखकर वृद्धि का हेतु जिन्हें प्रतीत नहीं होता, सचमुच वे 'अन्धे' हैं। आत्मा की रक्षा से तात्पर्य उसे कामक्रोधादि से बचाकर उसको उन्नत करना है। यह कार्य वही कर सकते हैं जिनकी हिये की आँखें नहीं फूटी हैं।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

www.thearyasamaj.org

आचार: परमो धर्म:

–सत्येन्द्र सिंह आर्य 751/6, जागृति बिहार, मेरठ

'आचार' शब्द का प्रयोग महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बहुत व्यापक अर्थों में किया है और इसे 'धर्म की संज्ञा' दी है। अपनी पुस्तक 'व्यवहारभानु' में धर्म अधर्म का अन्तर स्पष्ट करते हुए ऋषिवर लिखते हैं-

''जो पक्षपात रहित न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, पाँचों परीक्षाओं के अनुकूल आचरण ईश्वराज्ञापालन, परोपकार करना 'धर्म' (और) जो इसके विपरीत है वह 'अधर्म' कहाता है।''

सत्य और असत्य का अन्तर जानने के लिए पाँचों परीक्षाओं की चर्चा महर्षि ने इसी पुस्तक में प्रश्नोत्तर के रूप में की है जो इस प्रकार है-

प्रश्न-सत्य और असत्य का निश्चय किस प्रकार से होता है क्योंकि जिसको एक सत्य कहता है दूसरा उसी को मिथ्या बतलाता है, उसका निर्णय करने में क्या-क्या साधन हैं ?

उत्तर-पांच है। उनमें से प्रथम-ईश्वर, उनके गुण कर्म स्वभाव और वेदविद्या, दूसरा-सृष्टिक्रम, तीसरा-प्रत्यक्ष आदि आठ प्रमाण, चौथा-आप्तों का आचार, उपदेश, ग्रन्थ और सिद्धान्त, और पांचवां-अपने आत्मा की साक्षी, अनुकूलता, जिज्ञासुता, पवित्रता और विज्ञान। ईश्वरादि से परीक्षा करना उसको कहते हैं कि जो-जो ईश्वर के न्याय आदि गुण पक्षपात रहित सृष्टि बनाने का कर्म और सत्य, न्याय, दयालुता, परोपकारिता आदि स्वभाव वेदोपदेश से सत्य धर्म ठहरे वही सत्य और धर्म है और जो जो असत्य और अधर्म ठहरे वही असत्य और अधर्म है। जैसे कोई कहे कि बिना कारण और कर्त्ता के कार्य होता है सो सर्वथा मिथ्या जानना। इससे यह सिद्ध होता है कि जो सृष्टि की रचना करने हारा पदार्थ है वही ईश्वर और उसके गुण, कर्म, स्वभाव वेद और सृष्टि क्रम, से ही निश्चित जाने जाते हैं। दूसरा 'सृष्टिक्रम' उसको कहते है कि जो-जो सृष्टिक्रम अर्थात् सृष्टि के गुण, कर्म, स्वभाव के विरुद्ध हो वह मिथ्या और अनुकूल हो, वह सत्य कहाता है। जैसे कोई कहे कि बिना मां-बाप के लड़का, कान से देखना, आंख से बोलना आदि होता या हुआ है। ऐसी-ऐसी बातें सृष्टिक्रम के विरुद्ध होने से मिथ्या और माता-पिता से सन्तान, कान से सुनना और आंख से देखना आदि सृष्टिक्रम से अनुकूल होने से सत्य ही है।

तीसरा प्रत्यक्ष आदि आठ प्रमाणों से ठीक-ठीक ठहरे वह सत्य और जो-जो विरुद्ध ठहरे वह मिथ्या समझना चाहिए। जैसे किसी ने किसी से कहा कि यह क्या है ? दूसरे ने कहा कि पृथिवी। यह प्रत्यक्ष है। इसको देखकर इसके कारण का निश्चय करना 'अनुमान'। जैसे बिना बनाने हारे के घर नहीं बन सकता, वैसे ही सृष्टि का बनाने द्वारा ईश्वर भी बड़ा कारीगर है, यह दृष्टान्त 'उपमान' और सत्योपदेष्टाओं का उपदेश वह 'शब्द'। भूतकालस्थ-पुरूषों की चेष्टां, सृष्टि आदि पदार्थों की कथा आदि को 'ऐतिह्य'। एक बात को सुनकर बिना सुने ही प्रसंग से दूसरी बात को जान लेना, यह 'अर्थापत्ति'। कारण से कार्य होना आदि को 'सम्भव' और आठवां 'अभाव' अर्थात् किसी ने किसी से कहा कि जल ले आ। उसने वहां जल के अभाव को जानकर तर्क से जाना की जहां जल है, वहां से लाकर देना चाहिए, यह 'अभाव' प्रमाण कहाता है। इन आठ प्रमाणों से जो विपरीत न हो वह-वह सत्य और जो-जो उल्टा हो वह मिथ्या है। आप्तों के आचार और सिद्धान्त से परीक्षा करना उसको कहते हैं कि जो-जो सत्यावादी 'सत्यकारी', सत्यमानी, पक्षपात रहित, सब के हितैषी, विद्वान सब के सुख के लिए प्रयत्न करें, वे धार्मिक लोग 'आप्त' कहाते हैं। उनके उपदेश, आचार, ग्रन्थ और सिद्धान्त से जो युक्त हो वह सत्य और जो विपरीत हो, वह मिथ्या है। 'आत्मा से परीक्षा' उसको कहते हैं कि जो-जो अपना आत्मा अपने लिए चाहे, सो-सो सबके लिए चाहना और जो-जो न चाहे, सो-सो किसी के लिए न चाहना। जैसे आत्मा में वैसा मन में, जैसा मन में वैसा क्रिया में होने को जानने जनाने की इच्छा, शुद्ध भाव और विद्या के नेत्र से देखकर सत्य और असत्य का निश्चय करना चाहिए। इन पांच प्रकार की परीक्षाओं से पढ़ने पढ़ाने हारे तथा सब मनुष्य सत्याऽसत्य का निर्णय करके धर्म का ग्रहण और अधर्म का परित्याग करें और करावें।

'धर्म' और 'आप्त' शब्दों की परिभाषा महर्षि ने अपने 'स्वमन्त-व्यामन्तव्यप्रकाश' के क्रमांक 3 और 38 में क्रमश: इस प्रकार दी है।

धर्म-जो पक्षपात रहित न्यायाचरण, सत्यभाषणादियुक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरुद्ध है उसको 'धर्म' और जो पक्षपात सहित अन्यायाचरण मिथ्या भाषाणादि ईश्वराज्ञाभङ्ग वेदविरुद्ध है उसको अधर्म मानता हूं।

'आप्त'-जो यथार्थवक्ता, धर्मात्मा, सबके सुख के लिए प्रयत्न करता है, उसी को आप्त कहता हूँ।

मनु महाराज ने आचार के महत्त्व पर बहुत बल दिया है। इस विषय में महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में मनु के वचनों को प्रमाण के रूप में उपस्थित किया है।

आचार: परमो धर्म: श्रुत्युक्त: स्मार्त एव च।

तस्मादस्मिन्सदा युक्तों नित्यं स्यादात्मवान् द्विज:।। मनु 1/108

आचाराद्विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते।

आचारेण तु संयुक्त: सम्पूर्ण फल भाग्भवेत्।।

मनु 1/109

अर्थात्-सदाचार ही परम धर्म है। कहने, सुनने, सुनाने, पढ़ने, पढ़ाने का फल यही है कि जो वेद और वेदानुकूल स्मृतियों में प्रतिपादित धर्म का आचरण करना, इसलिए धर्माचार में सदा युक्त रहें। जो धर्माचरण से रहित है, वह वेद प्रतिपादित धर्मजन्य सुखरूप फल को प्राप्त नहीं हो सकता और जो विद्या पढ़के धर्माचरण करता है, वही सम्पूर्ण सुख को प्राप्त होता है।

अर्थ कामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।

धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं-श्रुति:।। मनु 2/3

अर्थ-जो पुरुष (अर्थ) स्वर्णा-दिरत्न और (काम) स्त्री-सेवनादि में नहीं फंसते हैं, उन्हीं को धर्म का ज्ञान प्राप्त होता है। जो धर्म के ज्ञान की इच्छा करे, वे वेद द्वारा धर्म के ज्ञान का निश्चय करें क्योंकि धर्माधर्म का निश्चय बिना वेद के ठीक-ठीक नहीं होता।

यदि स्थूल रूप से विचार करें तो वैदिक वाङ्मय में सत्य, आचार, धर्म आदि शब्दों का प्रयोग सच्चरित्रता न्यायाचरण सुशीलता आदि अर्थों में हुआ है। वैदिक परम्परा और मर्यादा के अनुसार चरित्रवान बनना बनाना भारतीय संस्कृति की सबसे पहली शिक्षा है। संसार में जिसका चरित्र अच्छा है, वह महान है। (दुराचार के आरोप के कारण अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति की विश्वभर में निन्दा हुई और उन पर महाभियोग चला)। चरित्र की महिमा प्रत्येक युग में रही और आज भी है। सतयुग में राजा हरिश्चन्द्र अपनी ईमानदारी, सच्चाई, कर्त्तव्य परायणता और चरित्र के लिए प्रसिद्ध थे। त्रेता युग में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र, उनके छोटे भाई लक्ष्मण, भरत अपने महान आदर्शों, परम्पराओं और चरित्र के लिए विश्व-विख्यात हैं। द्वापर युग के योगेश्वर श्रीकृष्ण जी महाराजा के विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है-''देखो ! महाभारत के योगिराज श्री कृष्ण जी का चरित्र महान है जिन्होंने जीवन के आरम्भ से लेके मृत्यु पर्यन्त एक भी पाप रूप कर्म नहीं किया।'' चरित्र शिक्षा की महती धरोहर है। बिना चरित्र शिक्षा अधूरी है।

शुभाचरण का नाम चरित्र है। ऋषिवर लिखते हैं-''जो धर्मयुक्त कामों का आचरण, सुशीलता, सत्पुरुषों का संग और सद्विद्या के ग्रहण करने में रुचि आदि आचार है और इनसे विपरीत अनाचार कहलाता है।'' मनु महराज ने चरित्र के सम्बन्ध में लिखा है

वृन्तम् यत्नेन संरक्षेद्, वित्तमेति च याति च।

अक्षीणो वित्तत: क्षीणो, वृन्तस्तुहतो हत:।।

संसार के स्त्री-पुरुषों को चरित्र की रक्षा यत्न से करनी चाहिए। धन तो आता है और चला जाता है। (वित्तत: क्षीण:) धन यदि नष्ट हो जाये तो समझो (अक्षीण:) कुछ भी हानि नहीं हुई है। (वृन्तस्तु हतो हत:) यदि चरित्र नष्ट हो जाये तो समझो कि हमारा सब कुछ नष्ट हो गया।

चरित्र के नष्ट होने से होने वाली हानियों की ओर संकेत इस प्रकार के श्लोकों में किया गया है-

(शेष पृष्ठ 7 पर)

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

शिक्षा किसे कहते हैं ?

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने ग्रन्थों में जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश ड़ाला है। महर्षि दयानन्द सरस्वती व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास चाहते थे। इसीलिए स्वामी दयानन्द जी ने हर वस्तु का सूक्ष्मता से अध्ययन किया है। व्यवहारभानु नामक छोटी सी पुस्तक में महर्षि दयानन्द ने जीवन व्यवहार की सभी महत्वपूर्ण बातों पर प्रकाश ड़ाला है। महर्षि दयानन्द की दृष्टि में शिक्षा किस कहते हैं? इस विषय पर चिन्तन करते हैं-

प्रश्न-शिक्षा किसको कहते हैं?

उत्तर- जिससे मनुष्य विद्या आदि शुभ गुणों की प्राप्ति और अविद्यादि दोषों को छोड़ के आनन्दित हो सकें, वह शिक्षा कहाती है।

प्रश्न-विद्या और अविद्या किसको कहते हैं?

उत्तर-जिससे पदार्थ का स्वरूप यथावत् जानकर, उससे उपकार लेके, अपने और दूसरों के लिए सब सुखों को सिद्ध कर सकें वह विद्या और जिससे पदार्थों के स्वरूप को अन्यथा जानकर अपना और पराया अनुपकार कर लेवे, वह अविद्या कहाती है।

प्रश्न-मनुष्यों को विद्या की प्राप्ति और अविद्या के नाश के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर-वर्णोच्चारण से लेके वेदार्थ ज्ञान के लिए ब्रह्मचर्य आदि कर्म करना योग्य है।

प्रश्न- ब्रह्मचारी किसको कहते हैं?

उत्तर- जो जितेन्द्रिय हो के ब्रह्म अर्थात् वेद विद्या के लिए आचार्यकुल में जाकर विद्याग्रहण के लिए प्रयत्न करे। वह ब्रह्मचारी कहाता है।

प्रश्न- आचार्य किसको कहते हैं?

उत्तर- जो विद्यार्थियों को अत्यन्त प्रेम से विद्या और धर्मयुक्त व्यवहार की शिक्षा पूर्वक विद्या होने के लिए तन-मन और धन से प्रयत्न करे। उसको आचार्य कहते हैं।

प्रश्न- अपने सन्तानों के लिए माता-पिता और आचार्य क्या-क्या शिक्षा करें?

उत्तर- **मातृमान् पितृमानाचार्य्यवान् पुरूषो वेद।** शतपथब्राह्मण

अहोभाग्य उस मनुष्य का है कि जिसका जन्म धार्मिक विद्वान् माता-पिता और आचार्य के सम्बन्ध में हो। क्योंकि इन तीनों की ही शिक्षा से मनुष्य उत्तम होता है। ये अपने सन्तान और विद्यार्थियों को अच्छी भाषा बोलने, खाने, पीने, बैठने, उठने, वस्त्रधारणे, माता-पिता आदि का मान्य करने, उनके सामने यथेष्टाचारी न होने, विरूद्ध चेष्टा न करने आदि के लिए प्रयत्न से नित्यप्रति उपदेश किया करें, और जैसा-जैसा उसका सामर्थ्य बढ़ता जाए, वैसी-वैसी उत्तम बातें सिखलाते जाएं। इसी प्रकार लड़के और लड़कियों को पांच वा आठ वर्ष की अवस्था पर्यन्त माता- पिता की और इसके उपरान्त आचार्य की शिक्षा होनी चाहिए।

प्रश्न- क्या माता-पिता जैसी चाहें वैसी शिक्षा करें?

उत्तर- नहीं, जो माता-पिता और आचार्य अपने सामने यथा-तथा बकने, निर्लज्ज होने, व्यर्थ चेष्टा करने आदि बुरे कर्मों से हटाकर, विद्या आदि शुभगुणों के लिए उपदेश कर तन, मन, धन लगा के उत्तम विद्या व्यवहार का सेवन कराकर अपने सन्तानों को सदा श्रेष्ठ करते जाते हैं, वे माता-पिता और आचार्य कहाकर धन्यवाद के पात्र हैं। फिर वे अपने सन्तान और शिष्यों को ईश्वर की उपासना, धर्म, अधर्म, प्रमाण, प्रमेय, सत्य, मिथ्या, पाखण्ड़, वेद, शास्त्र आदि के लक्षण, और उनके स्वरूप का यथावत् बोध करा, और सामर्थ्य के अनुकूल उनको वेदशास्त्रों के वचन भी कण्ठस्थ कराकर विद्या पढ़ने, आचार्य के अनुकूल रहने की रीति भी जना देवें कि जिससे विद्या प्राप्ति आदि प्रयोजन निर्विघ्न सिद्ध हों, वे ही माता-पिता और आचार्य कहाते हैं।

प्रश्न- विद्या किस-किस प्रकार और कर्मों से होती हैं?

उत्तर- **चतुर्भिः प्रकारैर्विद्योपयुक्ता भवति। आगमकालेन स्वध्यायकालेन प्रवचनकालेन व्यवहारकालेनेति।।**

विद्या चार प्रकार से काम आती है- आगम, स्वाध्याय, प्रवचन और व्यवहारकाल। आगमकाल उसको कहते हैं कि जिससे मनुष्य पढ़ाने वाले से सावधान होकर, ध्यान देके, विद्यादि पदार्थ ग्रहण कर सकें। स्वाध्याय काल उसको कहते हैं कि जो पठन समय में आचार्य के मुख से शब्द, अर्थ और सम्बन्धों की बातें प्रकाशित हों, उनको एकान्त में स्वस्थचित्त होकर पूर्वापर विचार के ठीक-ठीक हृदय में दृढ़ कर सकें। प्रवचनकाल उसको कहते हैं कि जिससे दूसरे को प्रीति से विद्याओं को पढ़ा सकना। व्यवहारकाल उसको कहते हैं कि जब अपने आत्मा में सत्यविद्या होती है, तब यह करना है, वह ठीक-ठीक सिद्ध होके वैसा ही आचरण करना हो सके। ये चार प्रयोजन हैं। तथा अन्य भी चार कर्म विद्याप्राप्ति के लिए हैं- श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार।

श्रवण उसको कहते हैं कि आत्मा मन के, और मन श्रोत्र इन्द्रिय के साथ यथावत् युक्त करके अध्यापक के मुख से जो-जो अर्थ और सम्बन्ध के प्रकाश करने हारे शब्द निकलें, उनको श्रोत्र से मन और मन से आत्मा में एकत्र करते जाना।

मनन उसको कहते हैं कि जो-जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध वाला आत्मा में एकत्र हुए हैं उनका एकान्त में स्वस्थचित्त होकर विचार करना कि कौन शब्द किस अर्थ के साथ, कौन अर्थ किस शब्द के साथ और कौन सम्बन्ध किस-किस शब्द और अर्थ के साथ सम्बन्ध अर्थात् मेल रखता और इनके मेल से किस प्रयोजन की सिद्धि और उल्टे होने में क्या-क्या हानि होती है इत्यादि।

और निदिध्यासन उसको कहते हैं कि जो-जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध सुने, विचारे हैं वे ठीक-ठाक हैं वा नहीं? इस बात की विशेष परीक्षा करके दृढ़ निश्चय करना।

साक्षात्कार उसको कहते हैं कि जिन अर्थों के शब्द और सम्बन्ध सुने विचारे और निश्चय किए जाते हैं, उनको यथावत् ज्ञान और क्रिया से प्रत्यक्ष करके व्यवहारों की सिद्धि से अपना और पराया उपकार करना आदि विद्या की प्राप्ति के साधन हैं।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

ww.thearyasamaj.org

वेदों में कोई लौकिक इतिहास नहीं

–ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

वेदों के अनेक पदों से यह भ्रम होता है कि उनमें ऐतिहासिक स्त्री-पुरूषों, ऋषि-मुनियों, नगरों, नदियों, पर्वतों के नाम हैं। जिन्हें देखकर प्राय: विद्वान् कह देते है कि नेदों में लौकिक इतिहास है। पाश्चात्य संस्कृतज्ञ ही नहीं वेदों को स्वत: प्रमाण मानने वाले भारतीय वेद भाष्यकर सायणाचार्य आदि भी वेदों में लौकिक इतिहास को स्वीकार कर लेते हैं। ऐसा वेद के शब्दों को रूढ़ि मान बैठने से होता है। जब कि वास्तव में वे सभी आचार्यों के मत में यौगिक हैं। कालान्तर में उनके अर्थ विशेष में सीमित हो जाने पर वे रूढ़ होने लगे। वेदों में अनित्य इतिहास अर्थात् किसी व्यक्ति या जाति विशेष का उल्लेख नहीं है। ईश्वरीय ज्ञान का प्रादुर्भाव मानव उत्पत्ति के साथ ही होता है, अत: उसमें मानव इतिहास नहीं हो सकता है, क्योंकि इसके पूर्व मानव उत्पत्ति नहीं होने से इतिहास सृजित ही नहीं हुआ था। सृष्टि के आदि में जब ज्ञान का एक मात्र आधारवेद ही था और मनुष्यों के व्यवहार की एक मात्र भाषा वैदिक भाषा थी, तब मनुष्यों द्वारा रखे गये पदार्थों के नाम वैदिक नामों से भिन्न कैसे हो सकते थे।

इस विषय में मनु महाराज लिखते हैं कि:

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्।

वेद शब्देभ्य एवादो पृथक् संस्थाश्च निर्ममे।। (मनु० १।१२)

सृष्टि के आदि में ज्ञान देते समय परमेश्वर ने सब पदार्थों के नाम, कर्म आदि बता दिये। उन्हीं नामों का लोग प्रयोग करने लगे। यौगिक प्रक्रियानुसार वैदिक शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ हो जाते हैं। इस प्रकार से लोक में नाम आये, लोक से वेद में नहीं गये। वेद का इन ऐतिहासिक व्यक्तियों से कोई सम्बन्ध नहीं है।

वेद में लौकिक इतिहास मानने पर वेद को अनित्य मानना पड़ेगा, इससे ईश्वर में भी पक्षपात की सिद्धि होगी। यौगिक प्रक्रिया अनुसार अर्थ होने पर वेद का कोई भी शब्द व्यक्ति या स्थान विशेष का वाचक नहीं रहता। जहाँ ऐसा होता है, वस्तुत: वहाँ प्राकृतिक जगत् के कारण तथा कार्यरूप तत्त्वों का औपचारिक का अलंकारिक वर्णन होता है। इस विषय में मीमांसा भाष्यकार शब्द स्वामी लिखते है'' यह इतिहास जैसा प्रतीत होता है (वास्तव में है नहीं) यदि इतिहास माना जाये तो वेद को सादि अथवा अनित्य मानना पड़ेगा। परन्तु ऐसा नहीं है।

वेदों में लौकिक इतिहास वेशमात्र भी नहीं है-इस तथ्य को स्थापित करने का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती को जाता है। वेद में अर्जुन, द्रौपदी, राम, कृष्णा, सीता आदि ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम, गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियों के नाम, अयोध्या नगर आदि नाम अवश्य पाये जाते हैं, परन्तु वेद में इन लौकिक नामों से किंचित् मात्र भी सम्बन्ध नहीं है। वेद के सभी शब्द यौगिक है, आदिकाल में संस्कृत के समस्त नामपद यौगिक अर्थात् धातुज माने जाते थे। धात्विक अर्थों के अनुसार प्रकरणानुसार इनका अर्थ भिन्न हो जाता है।

उदाहरणार्थ-''यो वायुना यजति गोमतीषु'' (ऋ० ४।२१।४) अर्थात्-जो वायु द्वारा गोमती में होम करता है।

''सरस्वती यां पितरो हवन्ते'' (ऋ० १०/१७/५) अर्थात्-उस सरस्वती को जिसमें पितर हवन करते हैं।

उपर्युक्त ऋग्वेद के दोनों मन्त्रों में गोमती और सरस्वती नदियों के नाम नहीं है, अपितु यज्ञ और हवन से सम्बन्ध रखने वाले नाम हैं। इसलिए स्पष्ट ही वे किरण के बोधक हैं।

अम्बे, अम्बिकेऽम्बालिके न मा नचति कश्चन।

ससस्त्यश्वक: सुभाद्रिकां काम्पील-वासिनीम्।। (यजु० 23/18)

इस मन्त्र में वर्णित अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका तीनों महाभारत के काशीराज की कन्याएँ नहीं है, जिन्हें भीष्म उठा ले गये थे। अपितु यहाँ अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका माता, दादी और परदादी के वाचक है।

वैदिक काल में महाराज मनु के वंशजों ने सरयू नदी के तट पर अयोध्या नगरी का निर्माण किया था, वेद के शब्द से ही उसका नाम रखा था।

''अष्टचक्रानवद्वारा देवानां पूरयोध्या।'' अथर्व० २०/१/३२, ३२)

इस मन्त्र में शरीर को ही देवताओं की नगरी बताया है जिसमें आठ चक्र और नौ द्वार हैं)

नवद्वारे पुरे देही (गीता) अर्थात् जिसमें देही (आत्मा) निवास करता है।

इससे ज्ञात होता है कि वेदादि शास्त्रों में शरीर रूपी नगरी का नाम अयोध्या है।

''कृष्णा या: पुत्रोऽर्जुन''

अथर्व० २३/३/२६

वेद के इस मन्त्र में अर्जुन को द्रौपदी (कृष्णा) का पुत्र बताया है।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ''रात्रिर्वैकृष्णा, असावादित्यसत्स्या वत्सौऽर्जुन:''

यहाँ वेद और ब्राह्मण ग्रन्थ दोनों में कृष्णा (द्रौपदी) नाम रात्रि का है और उससे उत्पन्न होने के कारण आदित्य अथवा दिन (अर्जुन) उसका पुत्र है। इस प्रकार यहाँ द्रौपदी (रात्रि) और अर्जुन (दिन) को महाभारत की द्रौपदी और अर्जुन का वाचक नहीं माना जा सकता।

उपर्युक्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि वेद में अनित्य इतिहास अर्थात् किसी व्यक्ति या जाति विशेष का उल्लेख नहीं है। जिस वेदार्थ से वेद में लौकिक इतिहास का संकेत मिलेगा वह वेद की मूल भावना का घोतक होगा। वेद से भिन्न अन्य धार्मिक ग्रन्थों में लौकिक इतिहास, भूगोल पाया जाता है। इसलिए उन्हें ईश्वरीय रचना नहीं कहा जा सकता है। उदाहरणार्थ-

बाईबल-बाबुल के राजा नबूखुद नजर के राज्य के उन्नीसवें बरस के पांचवें मास सातवीं तिथि में बाबुल के राजा का एक सेवक नबूसर अद्दान जो निज सेना का प्रधान अध्यक्ष था। यरूसलम में आया और हर एक बड़े घर को जला दिया। (तौ० रा० प० २५/आ०८-१०)

कुरान-जब युसूफ ने अपने बाप से कहा कि ऐ बाप मेरे ! मैंने एक स्वयं देखा।

(मं० ३/सि० १२/सू. २२/आ० ४-५८)

हमने इस कुरान को अरबी में नाजिल किया है, ताकि तुम समझ सको।

(मं० ३/सि० १३/सू० १३/आ० ३६, ४०) (सूरते यूसुफ आ० १)

दूसरी आयत से लगता है कि खुदा का कुरान उतारने का मुख्य उद्देश्य केवल अरब वासियों का सुधार करना था। अरबी भाषा निश्चित रूप से एक देश विशेष की भाषा है। देश-विदेश की भाषा में ईश्वरीय ज्ञान देने से ईश्वर पर पक्षपात का आरोप लग सकता है। परन्तु न्यायकारी परम पिता परमेश्वर ने वेद रूपी ज्ञान संस्कृत भाषा में प्रदान किया जो मूलरूप से सब की भाषा थी।

बाईबल और कुरान में लौकिक इतिहास के अनेक उदाहरण मिलते हैं। जब कि हम कह सकते हैं कि वेदों से लौकिक इतिहास के अनेक उदाहरण मिलते हैं। जब कि हम कह सकते हैं कि वेदों से लौकिक इतिहास नहीं है।

यहाँ यह बात समझने की है कि इस लेख में रूढ़ और यौगिक शब्द कई बार आये है। इनके क्या अर्थ हैं यह हमको जानना उचित है। रूढ़ या रूढ़ि शब्द का अर्थ है, जैसा शब्द है उसका वैसा ही अर्थ लगा सेना और यौगिक शब्द का अर्थ होता है, उसके आगे-पीछे के प्रकरणानुसार अर्थ लगना जिसके काफी अर्थ निकल सकते हैं। वेदों में अधिकतर यौगिक शब्दों का ही प्रयोग हुआ है। उनका भाष्यकारों ने रूढ़ी अर्थ लगा लिया, इसी से अर्थ का अनर्थ हुआ है।

www.thearyasamaj.org

एक हजार वर्ष पूर्व भारत के हिन्दुओं की जीवन शैली

-ले० कृष्ण चन्द्र गर्ग, 831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा,

यह लेख अल-बिरूनी की पुस्तक 'भारत' के आधार पर लिखा गया है। अल-बिरूनी ईरानी मूल का मुसलमान था। उसका जन्म सन् 1973 में हुआ था। वह भारत में कई वर्ष तक रहा था। उसने उस समय के भारत के सम्बन्ध में इस पुस्तक में विस्तार से लिखा है।

मूर्तिपूजा-भारत में निम्न वर्ग के अशिक्षित लोगों जिनको अधिक समझ नहीं है, के लिए ही मूर्तियां स्थापित की जाती थीं। दर्शनशास्त्र और धर्मशास्त्र का अध्ययन करने वाले विद्वान लोग तो अमूर्त ईश्वर की ही उपासना करते हैं। ईश्वर को दर्शाने के लिए बनाई गई मूर्तियों की अराधना तो वे स्वप्न में भी नहीं कर सकते।

वेद-ब्राह्मण वेद का पाठ बिना उसे समझे करते हैं। वैसा ही वे कण्ठस्थ भी कर लेते हैं और वही एक से सुनकर दूसरा याद कर लेता है। उनमें से थोड़े ही ऐसे हैं जो उसकी टीका भी पढ़ते हैं और वे तो गिने चुने ही होंगे जिन्हें वेद की विषयवस्तु और उसके भाष्य पर ऐसा अधिकार हो कि वे उस पर कोई शास्त्रार्थ कर सकें।

ब्राह्मण क्षत्रियों को वेद की शिक्षा देते हैं। क्षत्रिय उसका अध्ययन तो कर सकते हैं, लेकिन उन्हें उसकी शिक्षा देने का अधिकार नहीं। वैश्यों और शूद्रों को तो वेद को सुनने की भी मनाही है, उसके उच्चारण और पाठ की तो बात दूर है। यदि उनमें से किसी के बारे में यह साबित हो जाए कि उसने वेद-पाठ किया है तो ब्राह्मण उसे दण्डनायक के सामने पेश कर देते और दण्डस्वरूप उसकी जीभ कटवा दी जाती।

जातपात-क्षत्रिय प्रजा का शासन करता है और उसकी रक्षा करता है। वैश्य का काम खेती करना, पशुपालन है। शूद्र ब्राह्मण के सेवक जैसा होता है जो उसके काम की देखभाल और उसकी सेवा करता है।

प्रत्येक मनुष्य जो कोई ऐसा व्यवसाय करने लगता है जो उसकी जाति के लिए वर्जित है, जैसे ब्राह्मण का व्यापार करना, शूद्र का खेती करना तो वह ऐसे पाप या अपराध का दोषी माना जाता है जिसे वे चोरी जैसा ही समझते हैं।

यदि कोई ब्राह्मण किसी शूद्र के घर कई दिन तक भोजन कर ले तो उसे जाति से निकाल दिया जाता है और उसे फिर से जाति में शामिल नहीं किया जाता।

जब मुस्लिम देशों से हिन्दू दास भागकर अपने देश और धर्म में वापिस आते हैं तो उन्हें स्वीकार नहीं किया जाता।

जो लोग हिन्दू नहीं हैं और मनुष्यों का वध करते हैं, पशुओं की हत्या करते हैं और गोमांस खाते हैं मलेच्छ अर्थात् अपवित्र कहे जाते हैं।

पुस्तक लिखना-हिन्दुओं के यहां उनके दक्षिण प्रदेश में एक पतला-सा पेड़ खजूर और नारियल जैसा होता है जिसमें फल लगता है जो खाया जाता है। उसके पत्ते एक गज लम्बे और तीन अंगुल चौड़े होते हैं। वे उसे ताड़ कहते हैं और उन पर लिखते हैं। वे इन पत्तों को एकत्र करके इनको बांध कर पुस्तक बना लेते हैं और बीच में सुराख करके उसे डोरी से सी देते हैं। इस प्रकार की पुस्तक को पोथी कहते हैं।

हिन्दू अपने ग्रन्थों का प्रारम्भ 'ओ३म्' शब्द से करते हैं। 'ओ३म्' शब्द की आकृति ॐ होती है।

सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण-हिन्दू खगोल शास्त्रियों को यह बात भली प्रकार ज्ञात है कि पृथ्वी की छाया से चन्द्रग्रहण और चन्द्रमा की छाया से सूर्यग्रहण होता है। लेकिन जनसाधारण हमेशा बड़े जोर-जोर से यह उद्घोष करते हैं कि राहु का सिर ग्रहण का कारण है।

धन, कर तथा ब्याज-खेती, पशु, व्यापार आदि से हुई कमाई में से सबसे पहले राजा को कर देते हैं, कुछ अपने आम खर्चों के लिए अलग रख लेते हैं, कुछ धन विद्वानों और अतिथियों की सेवा के लिए तथा शुभ कार्यों के लिए तथा कुछ भविष्य के लिए आरक्षित रख लेते हैं।

केवल ब्राह्मण सभी करों से मुक्त हैं।

ब्याज लेने की अनुमति केवल शूद्र को है, औरों के लिए मनाही है।

खानपान-मूलत: हिन्दुओं के लिए सभी प्रकार का वध वर्जित है और सभी प्रकार के अण्डे तथा मदिरा की भी मनाही है। शूद्र के लिए मदिरा की अनुमति है।

कुछ लोग भोजन के पश्चात् पान खाते हैं। पान के पत्ते की गर्मी शरीर की उष्मा को बढ़ाती है, पान में लगा चूना हर नम या गीली वस्तु को सुखा देता है और सुपारी दान्तों, मूड़ों और पेट को मज़बूत करती है।

गाय एक ऐसा पशु है जो मनुष्य के कई काम आता है-यात्रा के समय भार ढोना, जुताई-बुआई में काम आना, घर-गृहस्थी में दूध तथा उससे बनी वस्तुएं देना। इसके इलावा मनुष्य इसके गोबर का इस्तेमाल करता है। सर्दी के मौसम में उसकी सांस तक काम आती है।

फलित-ज्योतिष-हिन्दू सात ग्रह मानते हैं। उनमें बृहस्पति, शुक्र और चन्द्रमा को सर्वथा शुभ मानते हैं। शनि, मंगल और सूर्य को सर्वथा अशुभ मानते हैं। ग्रहों में राहु को भी शामिल कर लिया है जो वास्तव में ग्रह नहीं है। वे जन्मपत्री, फलित-ज्योतिष आदि को मानते हैं।

विवाह-हिन्दुओं में बहुत ही छोटी आयु में विवाह हो जाता है। इसलिए माता-पिता ही अपने पुत्र-पुत्रियों के विवाह की व्यवस्था करते हैं। विवाह के समय खुशियां मनाने के लिए गाजे-बाजे लाए जाते हैं। पति और पत्नी कर विछोह मृत्यु होने पर ही हो सकता है क्योंकि उनके यहां विवाह-विच्छेद (तलाक) की कोई परम्परा नहीं है। लड़का-लड़की का एक ही गोत्र में विवाह नहीं होता। इनकी कम से कम पाँच पीढ़ी में भी विवाह नहीं होता।

विधवा-यदि किसी स्त्री का पति मर जाए तो वह दूसरे पुरुष से शादी नहीं कर सकती। उसे दो में से एक विकल्प प्राप्त है-चाहे तो आजीवन विधवा रहे या सती हो जाए। सती होना श्रेयस्कर माना जाता है क्योंकि विधवा जब तक जीवित रहती है उसके साथ दुर्व्यवहार होता रहता है। जहां तक राजाओं की पत्नियों का सम्बन्ध है वे तो सती हो जाने की ही अभ्यस्त हैं, चाहे वे ऐसा चाहती हों या नहीं। इस सन्दर्भ में केवल उन स्त्रियों को अपवाद रूप में छोड़ देते हैं जो वयोवृद्ध हों और जिनकी सन्तान हो। इसका कारण यह है कि पुत्र अपनी माता के संरक्षण के लिए उत्तरदायी होता है।

विविध-हिन्दू पाजामा नहीं पहनते, उसके स्थान पर धोती पहनते हैं जो इतनी लम्बी होती है कि उनके पैर तक ढक जाते हैं। वे एक दूसरे का जूठा नहीं खाते। जिन बर्तनों में वे खाते हैं यदि मिट्टी के होते हैं तो खाने के बाद उन्हें फेंक देते हैं। पुरुष कानों में छल्ले, बाहों में कड़े, अनामिका और पैरों के अंगूठों में स्वर्ण मुद्रिकाएं पहनते हैं। वे अपनी कमर की दाहिनी ओर कुठार बांधते हैं। वे यज्ञोपवीत पहनते हैं जो बाएं कन्धे से कमर की दाहिनी ओर तक जाता है। सभी प्रकार के कार्य-कलाप और आपातकाल में वे स्त्रियों से सलाह लेते हैं। मृत व्यक्ति का ऋण उसके वारिस को चुकाना पड़ता है चाहे मृत व्यक्ति ने कोई सम्पत्ति छोड़ी हो या नहीं। मृत व्यक्ति के प्रति वारिस के लिए कई भोज भी कर्त्तव्य हैं। हिन्दू अपने शवों का दाह संस्कार करते हैं। परन्तु तीन वर्ष से कम आयु के बच्चों के शव जलाए नहीं जाते।

हिन्दुओं के त्योहार-वर्ष भर में हिन्दू बसन्त, भाद्रपद तृतीया, भाद्रपद अष्टमी, दीवाली, फाल्गुण पूर्णिमा, शिवरात्री आदि लगभग बीस त्योहार मनाते हैं। अधिकतर त्योहार स्त्रियां और बच्चे ही मनाते हैं। उन्हें मनाने का तरीका आज से बहुत भिन्न था।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

www.thearyasamaj.org

शान्ति और क्रांति

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी.एच. 53 सैक्टर 20 पंचकूला, हरियाणा

सामान्य लोक व्यवहार में शांति और क्रांति ये दोनों शब्द एक-दूसरे के विपरीतार्थक समझे जाते हैं। ऐसा माना जाता है जहां क्रांति हो वहां शान्ति नहीं हो सकती और जहां शांति हो वहां क्रांति का क्या काम। लेकिन प्रश्न उठता है कि क्या यही लोक प्रचलित अर्थ सही हैं और ये दोनों एक-दूसरे के विपरीतार्थक हैं। इसे समझने के लिए पहले हमें लोकप्रचलित अर्थों पर गहनता से विचार करना होगा और फिर उनकी तुलना संस्कृत व्याकरण के सही अर्थ से करनी होगा।

लोक व्यवहार में जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो कहा जाता है कि अमुक व्यक्ति शांत हो गया अर्थात शांति को मृत्यु के समानार्थक समझा जाता है और यदि कहीं कोई दंगा-फसाद, झगड़ा चल रहा हो तो उसे क्रांति माना जाता है। वर्तमान में आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवाद जैसे सीरिया में आई एस आई एस की बर्बरता से लेकर कश्मीर में पत्थरबाजी तक को उनके समर्थक क्रांति के रूप में देखते हैं और वहीं दूसरी ओर इसके विरोधी इन आतंकी वारदातों को बंद करवा के शांति स्थापना की बात करते हैं। अब प्रश्न उठता है क्या यही सामान्य प्रचलित क्रांति और शांति है या इसके अर्थ इससे हटकर कुछ और हैं। इस प्रकार सामान्य प्रचलित अर्थों में शांति के उपरान्त क्रांति या क्रांति में शांति संभव प्रतीत नहीं होती। इसे समझने के लिए इनके संस्कृत व्याकरण शास्त्रों में दिए अर्थों को जानना होगा।

शमु धातु से क्तिन, प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग 'शान्ति' शब्द सिद्ध होता है। इसी प्रकार क्रमु धातु का क्तिन, प्रत्यय लगाकर 'क्रांति' शब्द है। 'शमु' शम् का अर्थ है 'उपशम्' या समन्वित होना। क्रमु' क्रम का अर्थ है ''पादविक्षेप'' या आगे बढ़ना। इस प्रकार संस्कृत व्याकरण के अनुसार न तो शांति का अर्थ प्रगतिशून्यता है और न क्रांति का अर्थ तोड़-फोड़ कर किसी चीज़ को अस्तव्यस्त करना है।

इसे और स्पष्ट रूप से समझने के लिए पहाड़ी नदी के तीव्र जल प्रवाहमान का उदाहरण लेते हैं। यदि तीव्र गति से प्रवाहमान पहाड़ी नदी का जल अपने निर्धारित मार्ग पर तटबंधों के बीच में चले तो वह उर्जा, बिजली, सिंचाई के लिए पानी प्रदान करता है अर्थात बंधे हुए मार्ग पर सुव्यवस्थित या समन्वित ढंग से चलना भी शांति का प्रतीक है तथा उससे प्राप्त उर्जा, बिजली, सिंचाई का पानी आदि प्रगति की ओर ले जाने वाले क्रांति के प्रतीक हैं। इसके विपरीत यदि यही उर्जावान पहाड़ी नदी की जलधारा अपने मार्ग को छोड़कर बसी हुई आबादी के बीच में से निकलने लगती है तो हिमालयन सुनामी की तरह विनाश का कारण बनती है जिसे हम कदापि भी जल क्रांति का संज्ञा नहीं दे सकते।

अब इसे एक समाज के उदाहरण से समझें। कश्मीर में भ्रमित युवाओं द्वारा की जाने वाली पत्थरबाजी की घटनायें जो देश के लिए स्वीकार्य संविधान के प्रावधानों को तोड़कर की जा रही हैं या फिर जेएनयू जैसे विश्वविद्यालयों में देश विरोधी नारेबाजी वैदिक साहित्य में दिए क्रांति के अन्तर्गत नहीं आती अपितु ये तो विघटनकारी विनाशलीला है। यदि यही युवाशक्ति उस पहाड़ी नदी के तीव्र गति से प्रवाहमान, जल की तरह संविधान द्वार स्थापित स्वीकार्य प्रावधानों के तयबंधों के अन्तर्गत रहकर चले और सुव्यवस्थित ढंग से निर्माण कार्यों में लगे तो निश्चित रूप से न केवल अपनी व्यक्तिगत अपितु सामाजिक, प्रादेशिक और राष्ट्रीय प्रगति में सहायक सिद्ध होगी और यदि समन्वित होकर शांतिपूर्वक किसी भी प्रगति की दिशा में एक साथ चल पड़े तो औद्योगिक या हरित या किसी भी क्रांति का सूत्रपात कर देगी।

किसी भी क्रांति अर्थात एक दिशा विशेष में प्रगति से पूर्व उस क्रांति के अवयवों में शांति अर्थात समन्वय होना अत्यंत आवश्यक होता है। यदि समन्वय ना हो अर्थात व्यवस्था ना बनाई जाए या शांति स्थापित ना की जाए तो प्रगतिसूचक क्रांति भी संभव नहीं है। इसे एक और उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं। अव्यवस्थित भीड़ में मची भगदड़ जैसा अक्सर मेलों या मंदिरों में उत्सवों के बाद किसी भ्रम के कारण होता है वह विनाश ही लाती है और कई लोग इस भगदड़ में मारे जाते हैं। वहीं सेना की सुव्यवस्थित समन्वित छोटी सी टुकड़ी भी बड़े से बड़े संकट के समय सफलतापूर्वक बचाव का कार्य करती है जैसा सेना ने कश्मीर में आई बाढ़ के समय करके दिखला दिया।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि हमें राष्ट्र में प्रगति के लिए शांति और क्रांति के सही अर्थों को समझना होगा और पहले समन्वय स्थापित करके शान्तिपूर्वक किसी भी दिशा विशेष उद्योग, हरित व निर्माण आदि में कार्य करते हुए प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते हुए क्रांति पैदा करनी होगी।

श्रद्धांजलि

श्री सुनील शास्त्री पुरोहित आर्य समाज फिरोजपुर का आकस्मिक निधन हम सभी के लिए अत्यन्त कष्टदायक है। एक महोपदेशक के रूप में आर्य समाज की पताका को लहराने वाले तथा स्वामी दयानन्द जी के सन्देश को जन-जन तक पहुँचाने में उनका कोई सानी न था। एक कर्मठ एवं शालीन व्यक्तित्व के रूप में उन्होंने लोगों के हृदय में अपना स्थान बनाया। पिछले कुछ वर्षों से वे मेरे सम्पर्क में थे। एक परिवारिक रूप में, उनकी मधुर आकर्षक वाणी के कारण लोग उनसे मिलने के लिए उत्सुक रहते थे। उनका ज्ञान अथाह सागर के समान गहन और विशाल था। आर्य समाज के सभी परिवारों में उनकी प्रतिष्ठा थी। सादा जीवन यापन करने वाले श्री सुनील दत्त शास्त्री की समाज को उन्नत करने और आर्य समाज के प्रचारक के रूप में लोगों को जागरूक करने में अहम भूमिका रही। आपने जो समाज सेवा की उसके लिए लोग आपको सदा याद रखेंगे। आपकी सरलता और सहमत के कारण ही आपको आर्य समाज में इतना सम्मान मिला। हम सब ईश्वर से प्रार्थना करते है कि आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और परिवार को यह कष्ट सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

-कमलेश कुमार शास्त्री

35वां वार्षिक उत्सव

आर्य समाज बंगा जिला शहीद भगत सिंह नगर का 35 वां वार्षिक उत्सव दिनांक 1 दिसम्बर 2016 से 4 दिसम्बर 2016 रविवार तक बड़ी श्रद्धा एवं उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस उत्सव में आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य रामानन्द जी शिमला, स्वामी डॉ. पूर्णानन्द सरस्वती जी मथुरा एवं भजनोपदेशक पं. उपेन्द्र आर्य चण्ड़ीगढ़ पधार रहे हैं, जो अपने मुखारविन्द से जीवन कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेंगे। कार्यक्रम का समय प्रातः 7:00 से 8:30 बजे तक एवं रात्रि 7:00 से 9:00 बजे तक होगा। रविवार का कार्यक्रम प्रातः 8:30 बजे से दोपहर 1:30 बजे तक रहेगा। आप सभी सपरिवार यज्ञ में आहुति अर्पण करके जीवन सफल बनाएं।

-पं. श्याम लाल आर्य मन्त्री आर्य समाज

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ 2 का शेष-आचार: परमो धर्म:

दुराचारी हि पुरुष लोके भवति निन्दित:।

दु:खभागी च सततं व्याधितो अल्पायुरेव च।।

अधर्मेण समायुक्तो यमस्य विषयं गता:।

महदु:खं समासाद्य तिर्यक् योनो प्रजायते।।

अर्थ-दुराचारी पुरुष की संसार में निन्दा होती है, उसे निरन्तर दु:ख भोगने पड़ते हैं, वह रोगों से ग्रस्त रहता है और उसकी आयु कम हो जाती है। अधर्माचरण वाला व्यक्ति (शीघ्र) मृत्यु को प्राप्त होता है, घोर दु:ख उसे भोगने पड़ते हैं और उसे कीट-पतंगों की योनियों में जन्म लेना पड़ता है।

सच्चरित्रता के लाभ महाराज मनु ने इस प्रकार कहे हैं-

भाचाराल्लभते ह्यायु राचारा-दीप्सिता: प्रजा:।

आचाराद्धनमक्षय्यं आचारोह-न्त्यलक्षणं।। मनु 4/156

अर्थ-शुद्धाचरण से, चरित्रवान बनने से स्त्री-पुरुष निश्चित रूप से दीर्घायु प्राप्त करते हैं। (आचरात् इप्सिता: प्रजा:) चरित्रवान् व्यक्ति की इच्छित सन्तान की कामना पूर्ण होती है। अनुकूल सन्तान प्राप्त होती है। आचारात् धनम् अक्षय्यं) चरित्र से अक्षय धन प्राप्त होता है। (आचारात् अलक्षणम् हन्ति) चरित्रवान व्यक्ति के अलक्षण, दुर्भावनाएं, दुष्प्रवृत्तियां नष्ट हो जाती हैं।

चरित्र्यं परमो धर्म: चरित्र्यं परमं तप:।

चारित्र्यस्य प्रभावेन तमस्तरति दुस्तरं।। मनु.

अर्थात् चरित्र की रक्षा करना, चरित्रवान बनना सभी स्त्री-पुरुषों का परम धर्म है। (चारित्र्यं परमं तप:) चरित्रवान बनना मानव जीवन का सबसे बड़ा तप है। चारित्र्यस्य प्रभावेन दुस्तरं तम: तरति) चरित्र के प्रभाव से मनुष्य मोह तो क्या जड़ता के कठिन अंधकार को भी पार कर जाता है। मनु महराज आगे कहते हैं-

सर्व लक्षण हीनोऽपि य: सदाचारवान् नर:।

श्रद्धधानोऽनसूयश्च शत-वर्षाणि जीवति।।

अर्थात्-जो व्यक्ति सब लक्षणों से हीन होते हुए भी (सदाचारवान् नर:) सदाचार युक्त रहता है अर्थात् सदा आलस्य को छोड़कर वेद और मनुस्मृति में कहे हुए सत्य और आप्त धर्मात्माओं का आचरण करता है। (श्रद्धधान:) अच्छे शुभ कार्यों में प्रेरणा रखता है। (अनसूयश्च) और निन्दा चुगली आदि दोष रहित रहता है, वह (शतं वर्षाणि जीवति) सुख से सौ वर्ष पर्यन्त जीता है।

शीलेन हि त्रयो लोका: शक्या जेतुं न संशय:।

न हि किंचिदसाध्यं वै लोके शीलवतां भवेत्।।

(शीलेन हि) मनुष्य निश्चित रूप से अपने स्वभाव से, शील से, चरित्र से (त्रय: लोका जेतुं शक्या) तीन लोकों के व्यवहार को जीत सकते हैं (न संशय:) इसमें किंचिद् भी संशय नहीं है। (शीलवतां वै लोके किंचिद् न हि असाध्यम्) उत्तम स्वभाव वाले व्यक्ति के लिए निश्चित रूप से संसार में कुछ भी कठिन नहीं है अर्थात् चरित्रवान् शीलवान् व्यक्ति के लिए प्रत्येक सुकार्य करना आसान है, साध्य है।

महाभारतकार ने आचार के लाभ इस प्रकार गिनाये है-

आचारात् लभते ह्यायु: आचारात् लभते श्रियं।

आचारात् कीर्तिम् आप्नोति पुरुष प्रेत्यचेह च।।

अनुशासन पर्व 104/206

अर्थात् (आचारात् हि आयु: लभते) आचारवान व्यक्ति लम्बी आयु प्राप्त करता है, (आचारात् प्रियं लभते) चरित्रवान व्यक्ति श्रेय, शोभा, शुभ लक्षण, कल्याण अर्थात् मुक्ति के मार्ग को प्राप्त करता है। चरित्रवान व्यक्ति जीवन-काल में भी एवं मृत्यु के पश्चात् भी कीर्ति को प्राप्त करता है।

वैदिक वाङ्मय में धर्म को आचरण की वस्तु (धर्म चर) बताया गया है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने वेद के आलोक में धर्म अर्थात् आचार को सत्याधारित माना है, इसीलिए अपने ग्रन्थों में एतद्विषयक परिभाषाओं में उन्होंने 'सत्याचरण', 'न्यायाचरण' जैसे शब्दों का बहुलता से प्रयोग किया है। 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में महर्षि द्वारा उद्घृत उपनिषद का एक वाक्य उनके भावों को ठीक-ठीक अभिव्यक्त करता है-

न हि सत्यात्परो धर्मो नानृता-त्पातक परम्।

न हि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मा-त्सत्यं समाचरेत्।।

पृष्ठ 5 का शेष-एक हजार वर्ष...

आज का दशहरा, दीवाली की आतिशबाजी, होली के रंग नहीं थे। दीवाली पर श्री राम की अयोध्या वापसी, भाद्रपद अष्टमी पर श्री कृष्ण का जन्म नहीं जुड़े थे।

वास्तव में श्री राम का अयोध्या वापसी का समय कार्तिक मास की अमावस्या नहीं था, वह समय चैत्र मास का था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार श्री राम के राज्याभिषेक की तैयारी चैत्र मास में हो रही थी, तभी उन्हें वनवास मिला। अत: वापसी भी चैत्र मास में ही होनी चाहिए क्योंकि वनवास के चौदह वर्ष तभी पूरे हो जाते हैं।

भाद्रपद अष्टमी को हिन्दू एक पर्व मनाते हैं जो 'ध्रव गृह' कहलाता है। वे स्नान करते हैं और पौष्टिक अन्न खाते हैं ताकि उनकी स्वस्थ सन्तान पैदा हो। कार्तिक अमावस्या के दिन दीवाली मनाई जाती है। इस दिन लोग स्नान करते हैं। बढ़िया कपड़े पहनते हैं, एक दूसरे को पान सुपारी भेंट करते हैं और एक दूसरे के साथ दोपहर तक हर्षोल्लास के साथ खेलते हैं। रात्रि को वे हर स्थान पर अनेक दीप जलाते हैं ताकि वातावरण सर्वथा स्वच्छ हो जाए। फाल्गुन पूर्णिमा के दिन स्त्रियों का पर्व है जो 'ओडस' या 'ढोला' अर्थात् 'डोला' कहलाता है। इस दिन वे किसी विशेष स्थान पर आग जलाती हैं। फिर उस आग को गांव के बाहर फेंक देती हैं।

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी बोधोत्सव 23, 24, 25 फरवरी 2017 को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर 'टंकारा समाचार' का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा।

आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 15 जनवरी 2017 तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जन उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हों। ऐसा निर्णय किया है कि प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पृष्ठों से अधिक न हो, तो सुविधाजनक रहेगा। आप प्रकाशनार्थ सामग्री ईमेल tankarasamachar@gmail.com पर "वॉकमेन चाणक्य" टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं। इसके लिये मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

-अजय सहगल, सम्पादक, टंकारा समाचार,
ए-419 डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली-110024
फोन नं. 9810035658

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज मन्दिर मानसा के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। इच्छुक उम्मीदवार अपनी योग्यता प्रमाण पत्र एवं पहचान सम्बन्धी कागजात संलग्न करके अपने प्रार्थना पत्र मंत्री आर्य समाज सभा, आर्य समाज गली मानसा-1 पंजाब के पते पर भेजें। उचित वेतन एवं निवास का प्रबन्ध किया जाएगा।-

सम्पर्क सूत्र -प्रधान आर्य समाज मो.-94630-20624

130वां वार्षिक उत्सव

जालन्धर आर्य समाज मन्दिर अड्डा होशियारपुर द्वारा आयोजित 130वां वार्षिक उत्सव दिनांक 28 नवम्बर सोमवार से 4 दिसम्बर 2016 रविवार तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर आचार्य राजू जी वैज्ञानिक दिल्ली के प्रवचन एवं श्री राजेश अमर प्रेमी जी जालन्धर के भजन होंगे। कार्यक्रम प्रात: 7:30 से 9:15 बजे तक हवन यज्ञ एवं प्रवचन तथा सांयकाल भजन एवं प्रवचन 7:45 से 9:15 बजे तक होगा। रविवार दिनांक 4 दिसम्बर का कार्यक्रम दोपहर 1:30 बजे तक होगा। आप सभी सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

-विनोद सेठ प्रधान आर्य समाज

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज माडल टाउन जालन्धर का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर माडल टाउन जालन्धर का 67वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। सभी यजमानों ने रविवार को 51 हवन कुंडों में आहुतियां डालते हुये यज्ञ की पूर्णाहुति डाली।

इस अवसर पर आचार्य प्रणव शास्त्री जी न प्रवचन करते हुये कहा कि वेद हमारी वैदिक संस्कृति की आत्मा है। इसलिये सभी को चाहिये कि वह अपने घरों में भी प्रतिदिन हवन यज्ञ करके पुण्य लाभ प्राप्त करें। उन्होंने यज्ञ की महिमा बताते हुये कहा कि यज्ञ हमें देवपूजा, संगतिकरण और दान करना सिखाता है। चाणक्य ने तो यह भी कहा है कि जहां प्रतिदिन यज्ञ नहीं होता वह घर श्मशान के तुल्य है। शास्त्री जी ने कहा कि यज्ञ से प्रदूषण ही समाप्त नहीं होता बल्कि यज्ञ से जहां सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं वहां सभी प्रकार के व्यंसन भी छूट जाते हैं। उन्होंने कहा कि यज्ञ में गाय के ही घी का प्रयोग करना चाहिये। इससे वातावरण शुद्ध होता है जिससे भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति होती है। इस अवसर पर समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने कहा कि सभी आर्य समाजों को मिल कर वैदिक धर्म का प्रचार एवं प्रसार करना चाहिये। श्री शर्मा जी ने कहा कि हम उस महर्षि की सन्तान हैं जिनके विचारों का लोहा आज सारा संसार मान रहा है। यदि हम सत्यार्थ प्रकाश का मंथन करें तो उसमें से आर्य समाज के दस नियमों के रूप में जो घी निकलता है उसको दुनिया अब तरक्की का मंत्र मान रही है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी को सम्मानित करते हुये आर्य समाज माडल टाउन के प्रधान श्री अरविन्द घई। उनके साथ प्रिंसीपल विनोद कुमार, रश्मि घई, श्रीमती सुशीला भगत, अजय महाजन व अन्य।

उन्नति का रहस्य सत्य है और सत्य बोलने वाले में जो विकास के गुण आ जाते हैं उन गुणों के बल पर वह उत्तम व्यक्ति बन जाता है और उत्तम का ही मूल्य होता है। आर्य समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई ने कार्यक्रम की सफलता के लिये सभी का आभार व्यक्त करते हुये सभ को वेद का संदेश घर घर पहुंचाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर समाज की वार्षिक रिपोर्ट श्री अजय महाजन जी ने पढ़ कर सब को सुनाई। श्रीमती रश्मि घई ने प्रभु तुम्हारे द्वार आए हैं, दिल में तमन्ना लाए हैं, पथिक पड़े चरणों में भजन सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। आर्य समाज माडल टाउन जालन्धर ने सिलाई सैंटर की 4 महिलाओं को सिलाई मशीन भेंट की गई और समाज के वरिष्ठ सदस्य आर.के पुरी, रमेश चोपड़ा, ओ.पी. महाजन, जोगिन्द्र भंडारी और बलदेव मेहता को उनके सहयोग के लिये स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज माडल टाउन जालन्धर के प्रिंसीपल विनोद कुमार चुघ, कुन्दन लालआर्य, ईश्वर चन्द्र रामपाल, आनन्द प्रकाश, शशि आनन्द, जे.पी. मल्होत्रा, प्रदीप आनन्द, हिन्दपाल सेठी, प्रोमिला अरोडा, श्री रणजीत आर्य, श्रीमती गुलशन शर्मा, श्री सुदेश महाजन, नीरू कपूर, रोहित अग्रवाल, अर्चना अग्रवाल, ज्योति शर्मा व अन्य भी मौजूद थे।

आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना का चुनाव आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पर्यवेक्षक श्री रणजीत आर्य सभा मंत्री और श्री मनोहर लाल जी आर्य अन्तरंग सदस्य व श्री महेन्द्र प्रताप जी आर्य लुधियाना की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री सतपाल नारंग को सर्वसम्मति से आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना का प्रधान चुना गया।

इससे पूर्व प्रात: सत्संग के पश्चात आर्य समाज के विशाल हाल में चुनाव की प्रक्रिया आरम्भ हुई। आर्य समाज के मंत्री सुरेन्द्र आर्य ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़ कर सुनाई जो करतल ध्वनि से पास हुई। कोषाध्यक्ष श्री रामा कान्त महाजन ने वार्षिक आय व्यय आडिट किया हुआ पढ़ कर सुनाया जो सर्वसम्मति से पारित हुआ। तत्पश्चात प्रधान संजीव चड्ढा ने आर्य समाज के कार्यों में सहयोग करने का धन्यवाद किया। सभी सदस्यों का तथा अपने मंत्रिमंडल का त्यागपत्र दिया। उसके पश्चात चुनाव अध्यक्ष ने प्रक्रिया आरम्भ करवाई। श्री संजीव चड्ढा ने प्रधान पद के लिये श्री सतपाल नारंग का नाम प्रस्तुत किया जिसका अनुमोदन श्री बृजेन्द्र भंडारी, सुरेन्द्र कुमार टंडन, रामा कान्त महाजन, सुभाष अबरोल, सुरेश चड्ढा, सुरिन्द्र शास्त्री, सुमित टंडन, के.के. पासी, अजय बत्रा ने किया तथा सभी सदस्यों ने सर्वम्मति से प्रधान चुना। चुनाव प्रक्रिया के प्रारम्भ में ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पर्यवेक्षकों श्री रणजीत आर्य तथा श्री मनोहर लाल जी ने कुछ नाराज लोगों को मनाते हुये प्रार्थना की कि वह चुनाव में आकर भाग लें परन्तु वह बाहर रह कर नाराजगी दिखाते रहे।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना के वार्षिक चुनाव में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पर्यवेक्षक श्री रणजीत आर्य और श्री मनोहर लाल आर्य जी, आर्य समाज के नव निर्वाचित पदाधिकारियों के साथ।

विशेष रूप से इस चुनाव में श्री यशपाल चौधरी, अजय नैय्यर (टैंकी) पधारे तथा जनरल हाउस को सम्बोधित किया। इसके अतिरिक्त पुष्प कुमार खुल्लर, सतबीर शर्मा, शशि त्रिपाठी, अशोक वैद्य, वेद प्रकाश भंडारी, वेद प्रकाश महाजन, चरणजीत पाहवा, कपिल देव शर्मा, अनिल महाजन, अश्विनी महाजन, श्याम सुन्दर आर्य आदि बहुत से आर्य भाई तथा स्त्री आर्य समाज की माता श्रीमती जनक रानी आर्य, सुलक्षण सूद, किरण टंडन आदि बहनों का सहयोग रहा। आर्य समाज के नव निर्वाचित प्रधान सतपाल नारंग को पूर्ण अधिकार दिया कि अपने मंत्रिमंडल विस्तार स्वयं करें। अन्य समितियां, उप समितियां, सभा के प्रतिनिधि आदि बनाने का पूर्ण अधिकार दिया।

शान्ति पाठ के पश्चात कार्यवाही सम्पन्न हुई। इस प्रक्रिया को सफल करने में आर्यवीर दल के सदस्य सर्वश्री सुमित टंडन, मोहित महाजन, सिद्धू अबरोल, गौरव पाहवा इत्यादि का पूरा सहयोग रहा। अंत में सारी प्रक्रिया तथा प्रधान श्री सतपाल नारंग जी के सर्वसम्मति के चुनाव को सर्वश्री रणजीत आर्य मंत्री, मनोहर लाल तथा महेन्द्र प्रताप जी ने हस्ताक्षर कर अनुमोदित किया।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।